

# आत्महत्या की बढ़ती प्रवृत्ति

सरकारी आंकड़ों के मुताबिक आज भारत में 15 से 35 साल उम्र के लड़कों-लड़कियों की असमय मृत्यु का एक मुख्य वजह आत्महत्या बन चुकी है। अगले कुछ साल में यह भयावह स्तर पर पहुंच सकता है और समाज और अर्थव्यवस्था पर गहरा असर पैदा कर सकता है।

■ अशोक जैनर, लंदन से

**हमारे** देश में बढ़ती आत्महत्या दुनिया में चर्चित वैज्ञानिक पत्रिका 'लैसेट' और बीबीसी की भी सुर्खियां बन चुकी है। इसकी गंभीरता का अनुमान इन आंकड़ों से ही लगाया जा सकता है। युवकों में मृत्यु का बड़ा कारण सड़क दुर्घटना के बाद आत्महत्या ही है। युवतियों की भी असमय मृत्यु का मुख्य कारण आत्महत्या है।

केंद्र सरकार के आंकड़ों से पता चलता है कि हमारे देश में हर साल आत्महत्या बढ़ती जा रही है। 2009 में 87,863 लोगों ने आत्महत्या की, तो 2010 में 93,207 लोगों ने और 2011 में यह बढ़कर 95,025 हो गई। संख्या और अधिक ही हो सकती है क्योंकि हम सभी जानते हैं कि आत्महत्या के सभी मामले दर्ज नहीं हो पाते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के आंकड़े भी भारत में आत्महत्या को एक विशेष समस्या के रूप में पेश करते हैं।

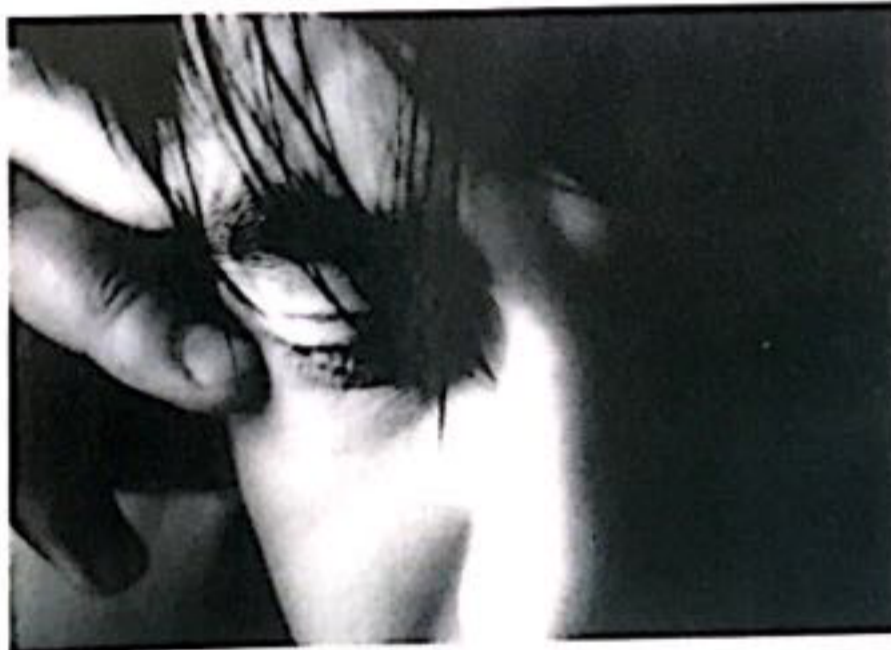
सरकारी आंकड़ों के मुताबिक आज भारत में 15 से 35 साल उम्र के लड़कों-लड़कियों की असमय मृत्यु का एक मुख्य वजह आत्महत्या बन चुकी है। जाहिर है, इसकी गहराई में जाकर इस समस्या को समझना आवश्यक हो जाता है।

हमारे देश की जनसंख्या चीन के बाद दुनिया में सबसे अधिक लगभग 1.23 अरब है। फिर, देश में करीब 6.5 प्रतिशत लोग भयानक मानसिक बीमारी से ग्रस्त हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार 2020 तक भारत की लगभग 20 प्रतिशत आबादी किसी न किसी प्रकार की मानसिक बीमारी का शिकार हो सकती

समाचार-विचार पार्श्विक

है। इन बढ़ती मानसिक बीमारियों का असर देश की आर्थिक स्थिति और आत्महत्या पर पड़ेगा। लिहाजा, आत्महत्याओं में बढ़ोतरी की ही आशंकाएं हैं। इसमें दो राय नहीं कि आत्महत्या का गहरा संबंध मानसिक स्वास्थ्य और मानसिक बीमारी से है।

आत्महत्या करने वाले 90 प्रतिशत लोगों को अक्सर कोई न कोई मानसिक बीमारी और



मानसिक स्वास्थ्य में गिरावट का शिकार पाया गया है। आत्महत्या करने वालों में अमूमन 50 प्रतिशत अवसाद के शिकार होते हैं। करीब 15 प्रतिशत नशे की लत के कारण आत्महत्या कर बैठते हैं और 5-7 प्रतिशत लोग साइजोफ्रेनिया नामक बीमारी से ग्रस्त होते हैं।

यह स्पष्ट हो जाता है कि आत्महत्याओं को रोकने या कम करने के लिए हमें जल्द से जल्द इन मानसिक बीमारियों को पहचानना होगा और उनका इलाज करना होगा। अब मुख्य सवाल यह है कि क्या हमारे देश में मानसिक बीमारियों को सही समय पर पहचान कर इलाज करने की सुविधाएं और मानसिक रोग विशेषज्ञ उपलब्ध हैं।

विश्व स्वास्थ्य संघ के आंकड़ों के अनुसार

हमारे देश में मानसिक स्वास्थ्य व मानसिक बीमारियों के इलाज की न उचित सुविधाएं हैं और न ही उचित संख्या में मानसिक रोग विशेषज्ञ हैं।

उपलब्ध अनुमान के मुताबिक, देश में हर 2-3 लाख लोगों के लिए केवल एक मानसिक रोग विशेषज्ञ उपलब्ध है। हमारे देश में कुल मिलाकर लगभग 4500 मानसिक रोग विशेषज्ञ हैं। इनमें अधिकतर बड़े-बड़े शहरों में रहते हैं। विकसित देशों से तुलना की जाए तो वहां हर एक लाख लोगों के लिए 15-40 मानसिक चिकित्सक उपलब्ध होते हैं। इसके अतिरिक्त वहां बच्चों, बूढ़ों, मंदबुद्धि लोगों, नशा व शराब की लत वाले लोगों के लिए अलग-अलग विशेषज्ञ होते हैं। हमारे देश में बड़ी समस्या यह भी है कि काफी संख्या में मानसिक रोग विशेषज्ञ भारत को छोड़कर अमेरिका, इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड में चले गए हैं। इसका मुख्य कारण विकसित देशों में मानसिक रोग विशेषज्ञों की जरूरत तथा अपने

देश में सुविधाओं की कमी है। लेकिन इससे हमारे देश में समस्या बढ़ जाती है।

इसके अतिरिक्त देश में मानसिक बीमारियों से लड़ने के लिए आवश्यक अस्पताल व स्टाफ भी नहीं है। हमारे देश में लगभग एक लाख लोगों के लिए केवल दो विस्तार उपलब्ध है जबकि विकसित देशों में एक लाख लोगों के लिए 30 से 50 विस्तार के अस्पताल उपलब्ध हैं।

इन अस्पतालों में पूर्ण स्टाफ व सुविधाएं होती हैं।

उपरोक्त आंकड़ों से स्पष्ट है कि हमारे देश में मानसिक विशेषज्ञों और अस्पतालों की कमी है। हम विकसित देशों से बहुत पीछे हैं तथा इस कारण अवसाद और आत्महत्या का प्रकोप बढ़ता ही जा रहा है। इसके साथ-साथ हमारे समाज में मानसिक रोगों के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण भी रुकावट बन रहा है।

हमारे समाज में अभी भी मानसिक बीमारी को दैवीय प्रकोप समझा जाता है। इस कारण लोग ऐसे रोगों को छिपाने की कोशिश करते हैं या फिर सही डॉक्टरों की जगह झाड़ू-पूंक व ज्योतिष के पास भटकते रहते हैं। इस कारण बीमारी अंदर ही अंदर गंभीर होती जाती है। ■■